9. जयशंकर प्रसाद

कवि परिचय –

जयशंकर प्रसाद का जन्म 30 जनवरी, 1890 को वाराणसी के एक संभ्रान्त परिवार में हुआ। 'सुंघनी साहु' परिवार के 'बाबू देवी प्रसाद' इनके पिता थे। माता का नाम मुन्नी देवी था। कविता करने की प्रवृत्ति आप में बचपन से ही रही। सातवीं कक्षा तक क्वींस कॉलेज में अध्ययन किया। इसके बाद पिता का असामयिक निधन हो गया, अतः आगे की पढ़ाई उर्दू, हिन्दी, संस्कृत एवं अंगरेजी विषय के साथ घर पर ही हुई। पारिवारिक समस्याओं का सामना करते हुए भी आपने स्वाध्याय जारी रखा। प्रसाद जी की मित्रता अपने समय के ख्याति प्राप्त लोगों से रही, जिनमें राय कृष्णदास, केदारनाथ पाठक, मैथिलीशरण गुप्त, पंत, निराला, प्रेमचन्द, महादेवी वर्मा, जैनेन्द्र आदि प्रमुख हैं। प्रसाद जी प्रतिभा एवं कौशल के धनी होने के साथ स्वभाव से विनम्र थे। अन्तर्मुखी प्रवृत्ति के साथ परिश्रमी स्वभाव इनकी विशेषता रही है।

प्रसादजी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उनकी लेखनी ने कविता, नाटक, कहानी, उपन्यास एवं निबंध आदि सभी विधाओं को समृद्ध किया है। आपकी विविध काव्य रचनाएँ इस प्रकार हैं – **मुक्तक काव्य संग्रह** – (1) चित्राधार (ब्रजभाषा में), (2) कानन कुसुम (खड़ी बोली हिंदी का प्रथम संग्रह), (3) झरना (25 कविताएँ, बाद में 55), (4) लहर (43 कविताएँ)। **प्रबंध काव्य** – प्रेम राज्य' (2) वनमिलन (3) अयोध्या का उद्धार (4) शोकोच्छवास (5) प्रेम-पथिक (पहले ब्रज भाषा में तथा बाद में खड़ी बोली में प्रकाशन), (6) महाराणा का महत्त्व (7) आँसू (8) कामायनी (महाकाव्य)। 'कामायनी' महाकाव्य पर इन्हें 'मंगला प्रसाद पारितोषिक' भी प्राप्त हुआ। **नाटक**– (1) सज्जन, (2) कल्याणी, (3) करुणालय, (4) विशाख, (5) अजातशत्रु, (6) जनमेजय का नाग यज्ञ, (7) कामना, (8) स्कन्दगुप्त, (9) एक घूँट, (10) चन्द्रगुप्त, (11) ध्रुवस्वामिनी। **कहानियाँ** – पाँच कहानी संग्रह हैं– (1) छाया, (2) प्रतिध्वनि, (3) आकाशदीप, (4) आँधी, (5) इन्द्रजाल। **उपन्यास** – कुल तीन उपन्यास लिखे जिनमें एक अधूरा रहा – (1) कंकाल, (2) तितली (3) इरावती (अधूरा) **निबंध** – साहित्यिक निबन्ध – (1) प्रकृति सौन्दर्य (2) भक्ति (3) हिन्दी साहित्य सम्मेलन (4) सरोज (5) हिंदी कविता का विकास। **ऐतिहासिक निबन्ध** – (1) सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य, (2) मौर्यों का राज्य परिवर्तन, (3) आर्यावर्त का प्रथम सम्राट, (4) दशराज युद्ध। **समीक्षात्मक निबन्ध** – (1) चम्पू (2) कवि और कविता (3) कविता का रसास्वाद (4) काव्य और कला (5) रहस्यवाद (6) रस (7) नाटकों में रस का प्रयोग (8) नाटकों का प्रारम्भ (9) रंगमंच इत्यादि।

प्रसाद छायावाद के प्रणेताओं में से एक कवि हैं। मूलतः प्रेम और सौंदर्य के कवि रहे हैं। इसके अलावा इनके काव्य में निम्नांकित विशेषताएँ पाई जाती हैं – (1) विषय की नवीनता (2) नवीन कल्पनाएँ (3) प्राकृतिक और मानवीय सौन्दर्य का चित्रण (4) लाक्षणिक वक्रता (5) भावनाओं का सूक्ष्म चित्रण (6) रहस्यात्मकता आदि छायावादी विशेषताओं से युक्त (7) सौंदर्य चेतना के साथ भारतीय इतिहास, दर्शन और संस्कृति के प्रति अनुराग तथा (8) राष्ट्रीय चेतना।

इस प्रकार प्रसाद के काव्य में छायावादी सौन्दर्यपरकता एवं भावुकता के साथ भारतीय संस्कृति के

उज्ज्वल पक्षों और इतिहास के गौरवपूर्ण पन्नों का उजला रंग भी मिलता है जो राष्ट्रवादी भावनाओं को जाग्रत करता है।

पाठ परिचय –

इस अध्याय में दी गई कविता – 'पेशोला की प्रतिध्वनि' राष्ट्र प्रेम से ओत–प्रोत है। इस कविता में कवि उदयपुर की पिछोला झील के किनारे बने हुए महाराणाओं के महलों और उनके झील में बने प्रतिबिम्बों के माध्यम से भारतीय लोगों को पुकार कर बार-बार कह रहा है कि हम आज हमारी पुरानी अस्मिता को भूल कर सो गए हैं। हमें पुनः जागना है तथा देश के पुनरुद्धार का भार उठाना है। अतः कवि पूछता है कि वह कौन होगा ? विचार हमें करना है कि वह मैं ही हूँ।

मूल पाठ –

पेशोला की प्रतिध्वनि

अरुण-करुण बिम्ब।
वह निर्धूम, भस्म रहित ज्वलन पिण्ड।
विकल विवर्तनों से
विरल प्रवर्तनों में
श्रमित नमित-सा
पश्चिम के व्योम में है आज निरवलम्ब-सा।
आहुतियाँ विश्व की अजस्र लुटाता रहा–
सतत्, सहस्र, कर-माला से
तेज ओज बल जो वदान्यता कदम्ब-सा।
पेशोला की उर्मियाँ हैं शान्त, घनी छाया में
तट-तरु है चित्रित तरल चित्रसारी में।
झोंपड़े खड़े हैं बने शिल्प के विषाद के –
दग्ध अवसाद से।
धूसर जलद-खण्ड झटक पड़े हैं
जैसे विजन अनन्त में।
कालिमा बिखरती है संध्या के कलंक-सी,
दुन्दुभि-मृदंग-तूर्य शान्त-सब मौन हैं।
फिर भी पुकार-सी है गूँज रही व्योम में–
''कौन लेगा भार यह?
कौन विचलेगा नहीं?
दुर्बलता इस अस्थि मांस की–
ठोक कर लोहे से, परख कर वज्र से
प्रलयोल्का-खण्ड के निकष पर कस कर

चूर्ण अस्थि पुंज सा हँसेगा अट्टहास कौन?
साधना पिशाचों की बिखर चूर-चूर होके
धूलि-सी उड़ेगी किस दृप्त फूत्कार से?
कौन लेगा भार यह?
जीवित है कौन?
साँस चलती है किसकी
कहता है कौन ऊँची छाती कर, मैं हूँ–
– मैं हूँ मेवाड़ मैं,
अरावली-शृंग-सा समुन्नत सिर किस का ?
बोलो, कोई बोलो–अरे, क्या तुम सब मृत हो ?''
आह! इस खेवा की! –
कौन थामता है पतवार ऐसे अंधड़ में,
अन्धकार-पारावार गहन नियति-सा
उमड़ रहा है, ज्योति-रेखाहीन - क्षुब्ध हो।
खींच ले चला है –
काल-धीवर अनन्त में
साँस-सफरी-सी अटकी है किसकी आशा में?
आज भी पेशोला के
तरल जल-मण्डलों में
वही शब्द घूमता-सा
गूँजता विकल है;
किन्तु वह ध्वनि कहाँ!
गौरव-सी काया पड़ी माया है प्रताप की
वही मेवाड!
किन्तु आज प्रतिध्वनि कहाँ ?''

कठिन शब्द–

निर्धूम – बिना धुँए के / विकल – व्याकुल, बेचैन / प्रवर्तनों – नवाचारों / आहुतियाँ – हवन सामग्री / निरवलम्ब–सा – बेसहारा–सा, आधारहीन / उर्मियाँ – लहरें / धूसर – धूल सने / दुन्दुभि – नगाड़ा, डंका, धौंसा / तूर्य – सींग से बना बाजा / निकष – कसौटी / शृंग – शिखर, चोटी / खेवा – नाव / गहन नियति – दुर्भाग्य / सफरी – मछली / विवर्तनों – घुमावों, चक्करों / विरल – मन्द, कम / व्योम – आकाश, नभ / अजस्र – निरन्तर, अपार / वदान्यता – उदारता / दग्ध अवसाद – दुःख में जलते हुए / विजन – वीरान, सुनसान / मृदंग – ढोल / प्रलयोल्का – प्रलयकारी पत्थर या बिजली / दृप्त फूत्कार – प्रखर

या तेजयुक्त फुफकार / समुन्नत – ऊँचा / पारावार – समुद्र / धीवर – नाविक।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. 'पेशोला की प्रतिध्वनि' कविता किस काव्य संग्रह में संगृहीत है ?

   (क) कानन कुसुम (ख) लहर

   (ग) झरना (घ) चित्राधार ( )

2. कवि ने 'पेशोला' किसे कहा है ?

   (क) अन्नासागर को (ख) जयसमन्द को

   (ग) उदयसागर झील को (घ) पिछोला झील को ( )

3. कविता में 'गहन नियति-सा' किसके लिए प्रयुक्त हुआ है ?

   (क) सौभाग्य के लिए (ख) दुर्भाग्य के लिए

   (ग) डूबने के लिए (घ) गहराई के लिए ( )

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. 'पेशोला झील' कहाँ स्थित है ?
2. गौरव-सी काया किसकी पड़ी है ?
3. साँस आशा में किसकी तरह लटकी हुई है ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. कवि लोगों को मृत क्यों मान रहा है ?
2. कवि दुर्बलताओं के लिए कसौटी किसे मानता है ?
3. पेशोला झील में बने महलों के प्रतिबिम्ब विषाद के शिल्प बने हुए क्यों लगते हैं ?
4. दुन्दुभि-मृदंग-तूर्य शान्त-सब मौन हैं।
   फिर भी पुकार-सी है गूँज रही व्योम में।।'' उक्त पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए।
5. खेवा की पतवार कौन खींच रहा है और कहाँ ले जा रहा है ?

निबंधात्मक प्रश्न –

1. 'पेशोला की प्रतिध्वनि' कविता का मूल भाव लिखिए।
2. पठित कविता के आधार पर प्रसाद के काव्य और व्यक्तित्व पर प्रकाश डालिए।
3. कविता में आए निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –

   (क) दुर्बलता इस अस्थि ..... दृप्त फुत्कार से ?

   (ख) आह! इस खेवा ..... किसकी आशा में ?

•••